Notes Level 1

Yogesh Kulkarni

‘योग ‘ शब्द व्युत्पत्ती : ‘युज’ धातू - जोडणे. संगम आत्मा आणि परमात्म्याचा

व्याख्या :

* योगश्चित्तवृत्ती निरोध: ।२। पतंजली योगसूत्र
* समत्वम योग उच्यते ।२-४८। भगवद्गीता
* योग: कर्मसु कौशलम ।२-५०। भगवद्गीता
* मनः प्रसमनोपायः योग इत्यभिदीयते । ३/९/३२ योग वशिष्ठ
* ‘तां योगामिती मन्यतें स्थिरमिन्द्रिय धारणं - कठोपनिषद २/५/४

लक्ष्य : स्व चे आकलन. आत्मा ते परमात्मा प्रवास

उद्देश : सर्वांगीण विकास, सामंजस्य स्थापना. मन बुद्धी व चरित्र यांना शुद्ध बनवणे .

भ्रम:

* धर्म : फक्त हिंदूंसाठी नाही. वैश्विक.
* व्यायाम: फक्त शारीरिक नाही तर मानसिक आणि आध्यत्मिक .
* चमत्कार/प्रदर्शन/सिद्धी प्राप्ती
* तरुणांसाठीच नाही तर सर्वांसाठी

उत्पत्ती: हजारो वर्षांपूर्वी, भारतात. शिव हे आदी योगी आणि गुरु. सप्तर्षींद्वारा सर्वत्र प्रसार.

इतिहास:

1. प्राचीन पुरातत्व अवशेषांवरून सिद्ध होते कि सिंधू हडप्पा संस्कृतीत योग होता, मुद्रा मुर्त्या होत्या.
2. साहित्य: “हिरण्यगर्भ योगस्य वक्ता मान्य:पुरातन:”, वेद , उपनिषद , दर्शन, बौद्ध, जैन परंपरा
3. पतंजली योगसूत्र

काल क्रम:

* वैदिक: १५०० इ पूर्व - ५०० इ पूर्व : सूर्यनमस्कार प्राणायाम , वेद, पाणिनी
* श्रेष्ठ अवधी: ५०० इ पूर्व - ८००: पतंजली योगसूत्र , व्यास भगवद्गीता , महावीर पंचमहाव्रत, बुद्ध अष्टांगिक मार्ग
* पश्चात : ८०० - १७००: आदी शंकराचार्य , रामानुजाचार्य , माधवाचार्य, भक्तियोगी (कबीर, तुलसी), हटयोगी (नाथ संप्रदाय)
* आधुनिक : १७०० नंतर: रमण महर्षी , विवेकानंद, परमहंस योगानंद, टी कृष्णमाचार्य, सत्यानंद सरस्वती

भारतीय दर्शन :

* आस्तिक (वेद मानणारे): न्याय (गौतम), वैशेषिक (कणाद), सांख्य (कपिल), मीमांसा (जैमिनी), योग(पतंजली), वेदांत (बादरायण)
* नास्तिक : जैन (महावीर), बौद्ध , चार्वाक (बृहस्पती)

सूक्ष्म व्यायाम: हलके, योगाभ्यासाच्या आधी. स्वामी धीरेंद्र ब्रह्मचारी . शरीर लवचिक व तयार होते.

स्थूल व्यायाम: सर्व शरीराचा, गतीचा, शक्तीचा संचार .

सूर्यनमस्कार :

| प्रणमासन | ॐ मित्राय नमः। | उच्छवास | ॐ ह्रां |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| हस्तउत्तानासन | ॐ रवये नमः। | श्वास | ॐ ह्रीं |  |
| पादहस्तासन | ॐ सूर्याय नमः। | उच्छवास | ॐ ह्रूं |  |
| अश्वसंचालन | ॐ भानवे नमः। | श्वास | ॐ ह्रैं |  |
| पर्वतासन | ॐ खगाय नमः। | उच्छवास | ॐ ह्रौं |  |
| अष्टांग नमस्कार | ॐ पूष्णे नमः। | रोखा | ॐ ह्रः |  |
| भुजंगासन | ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। | श्वास | ॐ ह्रां |  |
| पर्वतासन | ॐ मरीचये नमः। | उच्छवास |  |  |
| अश्वसंचालन | ॐ आदित्याय नमः। | श्वास | ॐ ह्रूं |  |
| पादहस्तासन | ॐ सवित्रे नमः। | उच्छवास | ॐ ह्रैं |  |
| हस्त उत्तानासन | ॐ अर्काय नमः। | श्वास | ह्रौं |  |
| प्रणमासन | ॐ भास्कराय नमः। | उच्छवास | ॐ ह्रः |  |
|  | ॐ श्रीसवितृसूर्यनारायणाय नमः। |  |  |  |

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने।

आयुः प्रज्ञा बलं वीर्यं तेजस्तेषां च जायते ॥

षट्कर्म

* नेति
  + जलनेति
  + सूत्रनेति
  + तेलनेति
  + दुग्धनेेति
* धौति
  + वातसार धौति
  + वारिसार धौति
  + बहिव्सार धौति
  + बहिष्कृत धौति
  + दन्तमूल धौति
  + जिव्हामूल धौति
  + कर्णरन्ध्र धौति
  + कपाल रन्ध्र धौति
  + दण्ड धौति
  + वमन धौति
  + वस्त्र धौति
  + मूलशोधन धौति
* नौलि
* बस्ति
* कपालभाति
* त्राटक

आसन : *स्थिरसुखमासनम् : सुखपूर्वक स्थिरता से बैठने का नाम आसन है। या, जो स्थिर भी हो और सुखदायक अर्थात आरामदायक भी हो, वह आसन है। [ यम,नियम,****आसन****,प्राणायाम,प्रत्याहार,धारणा ध्यान समाधि ]*

| **आसनों की संख्या** | **ग्रन्थ** | **ग्रन्थकर्ता** | **रचनाकाल** | **सन्दर्भ** |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| 2 | गोरक्ष शतक | [गुरु गोरख नाथ](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%97%E0%A5%8B%E0%A4%B0%E0%A4%96%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A5) | १०-११वीं शताब्दी | इसमें [सिद्धासन](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%A8), [पद्मासन](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%A8) का वर्णन है;[[5]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-Singh_2005-5)[[6]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-6) 84 claimed[[a]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-symbolism-7) |
| 4 | शिव संहिता | - | १५वीं शताब्दी | 4 बैठकर किए जाने वाले आसन वर्णित हैं ; आसनों की कुल संख्या 84 बतायी गयी है।; 11 मुद्राएँ[[7]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-FOOTNOTESingleton201029-8) |
| 15 | हठ योग प्रदीपिका | स्वामी [स्वात्माराम](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE) | १५वीं शताब्दी | 15 asanas described,[[7]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-FOOTNOTESingleton201029-8) 4 ([Siddhasana](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=Siddhasana&action=edit&redlink=1), [Padmasana](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=Lotus_position&action=edit&redlink=1), [Bhadrasana](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=Bhadrasana&action=edit&redlink=1) and [Simhasana](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=Simhasana&action=edit&redlink=1)) named as important[[8]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-sacred-texts.com-9) |
| 32 | [घेरण्ड संहिता](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%98%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1_%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE) | घेरण्ड | 1१७वीं शताब्दी | Descriptions of 32 seated, backbend, twist, balancing and inverted asanas, 25 mudras[[9]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-Mallinson_2004-10)[[7]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-FOOTNOTESingleton201029-8) |
| 52 | हठ रत्नावली | श्रीनिवास | १७वीं शताब्दी | 52 asanas described, out of 84 named[[b]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-11)[[10]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-EastBombay1988-12)[[11]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-Hatha_Ratnavali_2002-13) |
| 84 | जोग प्रदीपिका | रामानन्दी जयतराम | 1830 | 84 asanas and 24 mudras in rare illustrated edition of 18th century text[[12]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-FOOTNOTESingleton2010170-14) |
| 37 | योग सोपान | योगी घामंडे | 1905 | Describes and illustrates 37 asanas, 6 mudras, 5 bandhas[[12]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-FOOTNOTESingleton2010170-14) |
| c. 200 | योग दीपिका | [बी के एस अयंगार](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A5%87%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A5%82%E0%A4%B0_%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%A3%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C_%E0%A4%85%E0%A4%AF%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%B0) | 1966 | Descriptions and photographs of each asana[[13]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-Iyengar_1991-15) |
| 908 | *मास्टर योग चार्ट* | [धर्म मित्र](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE_%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0) | 1984 | Photographs of each asana[[14]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8#cite_note-Mittra2003-16) |

प्राणायाम

[यम](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AF%E0%A4%AE), [नियम](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%AE), [आसन](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B8%E0%A4%A8), **प्राणायाम**, [प्रत्याहार](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0), [धारणा](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A4%BE), [ध्यान](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%A8), तथा [समाधि](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A7%E0%A4%BF) । **प्राणायाम = प्राण + आयाम** । इसका शाब्दिक अर्थ है - **प्राण या श्वसन** को लम्बा करना या फिर **जीवनी शक्ति** को लम्बा करना । प्राणायाम का अर्थ कुछ हद तक श्वास को नियंत्रित करना हो सकता है | परन्तु स्वास को कम करना नहीं होता है | प्राण या श्वास का आयाम या विस्तार ही प्राणायाम कहलाता है | यह प्राण-शक्ति का प्रवाह कर व्यक्ति को जीवन शक्ति प्रदान करता है।

प्राणायाम के प्रकार -

घेरन्ड संहिता के अनुसार -

**सहित: सूर्यभेदश्च उज्जायी शीतली तथा ।**

**भस्त्रिका भरमारी मूर्च्छा केवली चाष्टकुम्भका: ।।**

घेरन्ड संहिता के अनुसार प्राणायाम के आठ भेद बताए गए हैं -

सहित, सूर्यभेदी, उज्जायी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी, मूर्च्छा और केवली ।

हठप्रदीपिका के अनुसार -

**सूर्यभेदनमुज़्जायी सीत्कारी शीतली तथा ।**

**भस्त्रिका भ्रामरी मूर्च्छा प्लाविनीत्यष्ट कुम्भक: ।।**

हठप्रदीपिका के अनुसार प्राणायाम के आठ भेद निम्न हैं -

सूर्यभेदन, उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी, मूर्च्छा और प्लाविनी ये आठ प्रकार के कुम्भक (प्राणायाम ) होते हैं ।

क्रिया:

* पूरक: श्वास घेणे
* कुम्भक : रोखणे
* रेचक : सोडणे

प्रकार :

* भस्त्रिका
* कपालभाति
* अनुलोम-विलोम
* भ्रामरी
* उज्जायी
* शितली
* चंदभेदी

बंध :

बंध मुद्राएँ शरीर की कुछ ऐसी अवस्थाएँ हैं जिनके द्वारा [कुंडलिनी](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%80) सफलतापूर्वक जाग्रत की जा सकती है। [घेरंड संहिता](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%98%E0%A5%87%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1_%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%BE) में २५ मुद्राओं एवं महत्वपूर्ण हैं:

(१) मूलबंध, (२) जालंधरबंध, (३) उड्डीयानबंध, (४) महामुद्रा, (५) महाबंध, (६) महावेध

(७) योगमुद्रा, (८) विपरीतकरणीमुद्रा, (९) खेचरीमुद्रा, (१०) वज्रिणीमुद्रा, (११) शक्तिचालिनीमुद्रा, (१२) योनिमुद्रा।

पुरुषार्थ

मानव के लक्ष्य या उद्देश्य से है ('पुरुषैर्थ्यते इति पुरुषार्थः')। पुरुषार्थ = पुरुष+अर्थ =पुरुष का तात्पर्य विवेक संपन्न मनुष्य से है अर्थात विवेक शील मनुष्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। प्रायः मनुष्य के लिये [वेदों](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6) में चार **पुरुषार्थों** का नाम लिया गया है - [धर्म](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE), [अर्थ](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5), [काम](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%AE) और [मोक्ष](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7)। [चार्वाक दर्शन](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%95_%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B6%E0%A4%A8) केवल दो ही पुरुषार्थ को मान्यता देता है- अर्थ और काम। वह धर्म और मोक्ष को नहीं मानता।

* धर्म : धर्म वह है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि हो यतो अभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। (कणाद, वैशेषिकसूत्र, १.१.२)
* अर्थ: मनुष्याणां वृत्तिः अर्थः । ([कौटिल्यीय अर्थशास्त्र](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0_(%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A5))) अर्थात जो भी विचार और क्रियाएं भौतिक जीवन से संबंधित है उन्हें 'अर्थ' की संज्ञा दी गयी है।
* काम : आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित तत्व, चक्षु, जिव्हा, तथा ध्राण तथा इन्द्रियों के साथ अपने अपने विषय - शब्द, स्पर्श, रूप, रस, तथा गंध में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति ‘काम’ है।
* मोक्ष: बद्ध अवस्था में इसे अपने कर्मों के अनुसार इसी जन्म अथवा अगले जन्मों में कर्मफल भोगने पड़ते हैं। मोक्ष को प्राप्त कर नया जन्म नहीं लेना पड़ता, वह बंधन से मुक्त हो जाता है।

उपनिषद्

वेदांचा भाग. लगभग [108](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=1%E0%A5%A68&action=edit&redlink=1) है, किन्तु [मुख्य उपनिषद](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%96%E0%A5%8D%E0%A4%AF_%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%B7%E0%A4%A6) [13](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A5%A7%E0%A5%A9) हैं। उपनिषदों में मुख्य रूप से 'आत्मविद्या' का प्रतिपादन है, जिसके अन्तर्गत [ब्रह्म](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B9%E0%A5%8D%E0%A4%AE) और [आत्मा](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE) के स्वरूप, उसकी प्राप्ति के साधन और आवश्यकता की समीक्षा की गयी है।

(१) **ऋग्वेदीय** -- १० उपनिषद्

(२) **शुक्ल यजुर्वेदीय** -- १९ उपनिषद्

(३) **कृष्ण यजुर्वेदीय** -- ३२ उपनिषद्

(४) **सामवेदीय** -- १६ उपनिषद्

(५) **अथर्ववेदीय** -- ३१ उपनिषद्

**कुल** -- १०८ उपनिषद्

**१. गद्यात्मक उपनिषद्:** १. ऐतरेय, २. केन, ३. छान्दोग्य, ४. तैत्तिरीय, ५. बृहदारण्यक तथा ६. कौषीतकि; इनका गद्य ब्राह्मणों के गद्य के समान सरल, लघुकाय तथा प्राचीन है।

**२.पद्यात्मक उपनिषद्** १.ईश, २.कठ, ३. श्वेताश्वतर तथा नारायण, इनका पद्य वैदिक मंत्रों के अनुरूप सरल, प्राचीन तथा सुबोध है।

**३.अवान्तर गद्योपनिषद्** १.प्रश्न, २.मैत्री (मैत्रायणी) तथा ३.माण्डूक्य

**४.आथर्वण (अर्थात् कर्मकाण्डी) उपनिषद्** अन्य अवांतरकालीन उपनिषदों की गणना इस श्रेणी में की जाती है।

**प्राचीनतम** १. ईश, २. ऐतरेय, ३. छान्दोग्य, ४. प्रश्न, ५. तैत्तिरीय, ६. बृहदारण्यक, ७. माण्डूक्य और ८. मुण्डक

**प्राचीन** १. कठ, २. केन

**अवान्तरकालीन** १. कौषीतकि, २. मैत्री (मैत्राणयी) तथा ३. श्वेताश्वतर

आश्रम:

* ब्रह्मचर्य (विध्यार्थी) १-२५ वर्षे
* गृहस्थ (कौटुंबिक) २६-५० वर्षे
* वानप्रस्थ (निवृत्ती) ५१-७५ वर्षे
* सन्यास (पूर्ण त्याग) ७५-१०० वर्षे

# References

* [How to start VCB ( Level -1, 2 & 3) Preparation](https://www.youtube.com/watch?v=HjGSsZGjxuw&list=PL3GsP_eVS0Ooi2-rX6sTV79SqJR1JuPZQ)
* Wikipedia